

Item Code: .

Participant Code: 122

विषय: "बरसने लगी ओस की बूँदें"  उआँटा धूरज की किरणों से बरसने लगी ओस की बूँदें थूखे ध्यास के उपर धाया ईक्ष्वर का वरहान, माया! थुंबह के मतवाने उजाला िठहर रही थी वह बचारा जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलसिला! लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ से लेके वैसाख, वे खुने रखे अपने आँख।
बेसहारा सूरज की किश्णों से बरसने लगी ओस की बूँदें सूखे धास के उपर धाया ड्विवह के मतवाले उजाला छिठूर रही भी वह बंचारा जीवन का मिश्म बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीड़ा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ से लेके वैसाख,
बेसहारा सूरज की किरणों से बरसने लगी ओस की बूँदें सूखे धास के उपर धाया ड्विंट के मतवाले उजाला ठिठूर रही भी वह बंचारा जीवन का मिर्थ बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीड़ा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ से लेके वैसाख,
बरसने लगी ओस की बूँहें सूखे आस के उपर धाया ई्रब्वर का वरहान, माया! शुंबह के मनवाले उजाला, ठिठूर रही भी वह बंचारा जीवन का निश्म बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँड को सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
बरसने लगी ओस की बूँहें सूखे आस के उपर धाया ई्रब्वर का वरहान, माया! शुंबह के मनवाले उजाला, ठिठूर रही भी वह बंचारा जीवन का निश्म बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँड को सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
शूखे थास के उपर धाया, इंक्रवर का वरहान, माया। शुंबह के मतवाले उजाला, छिद्रर रही भी वह, बंचारा जीवन का निश्म बुलबुला जीवन, पीड़ा-क्रीड़ा का सिलिसला। लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझं है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ से लेके वैसाख,
डूबह के मतवाने उजाना, छिठूर रही भी वह बंचारा जीवन का मिश्म बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझं है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
शुंबह के मनवाले उलाला, ठिठूर रही थी वह बंचारा जीवन का मिश्र्य बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलसिला! लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझं है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
िठ्ठर रही थी वह, बचारा जीवन का मिश्य बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद को, सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
िठ्ठर रही थी वह, बचारा जीवन का मिश्य बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद को, सच्चमुझ है कहना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
जीवन का मिश्य बुलबुला जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद की, सच्चमुझ है कहूना एक कहानी, सूझ। जाड़ ये लेके वैसाख,
जीवन, पीडा-क्रीडा का सिलिसला! लेकिन हरेक बूँद को सच्चमुझ है कहूना एक कहानी, सूझ। आड़ ये लेके वैसाख,
लेकिन हरेक बूँद को सच्चम्झ है कहूना एक कहानी, सूझ। आंड ये लेके वैसाख,
है कहूना एक कहानी, सूझ।
ं जाड़ ये लेके वैसाख,
ं जाड़ ये लेके वैसाख,
1 1101 771 71111 4176
कहा यह भी जाता है ;
"ओस की बूँ के का बरसना,
है कई किसानों का हीसला
पंथी को पेड़ का छाया है घोसला!

So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf). (Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki.



Item Code: ...

Participant Code: 122

'विचिन्न' है ओस की बूँहें
जी मिलता है वन, संघार, ब्रह्मांड से
' जिससे न मिलता 'जुलता' हम
पर बरसने लगी ओस के बूँ हैं, लेके गम !
मानव, जं। विचित्र है मानव,
हम दिंदारी के अनोधे पात्र
ज़िया के अनेक ध्रेत्रों में धात्र
अहाँ संसाधन है केवल, मात्र
क्रियान भी यो रहे आहेन क्षेत्र !
सिंधु की अनंत लहरों में
'सुनहत्ने रोक्षनी से पाया जन्म,
धराष्ट्रं के वात्सन्य पाया है
मिलता फिर लहरों में, न इसको मरण।
हम किया हत्य, इसके माँ निद्धों को
धटारे के अनमोन निद्याँ
वहा रही है धून शिवयाँ।
विश्व के सुमहले खंड़ांने
हैं, नावा के किनारें, दामाने !



958 Item Code: ..

Participant Code: 122

थ्वोल हो आशा के द्विं
ऊँचा रखो अपने आवादीं,
मिठा को कई रूपी 'अगैस'
उठो आत्मविश्वास रूपी सूर्य से, शेज़ !
मनु के कर्म से शिशता दूरी
जात (ईश्वर) का है सपना अधूरी;
थबको मिलाना, जुड़ाना
प्रका ही है उपाय ; विक्वेष की जलांगा
में लिख रहा हूँ ये पंक्तियाँ
आज के जमाने का तितिलयां
फैलाइो अपने-अपने रंग
थ्वीना मत, अपने-अपने पथ्व।
<del>X</del> <del></del>